बिना रसायन केले पकाने की तरकीब

भारत डोगरा

रामरति सरपतहां गांव, गोरखपुर ज़िला, कंपीयरगंज ब्लॉक में रासायनिक खाद व कीटनाशक दवा का उपयोग किए बिना इतनी बढ़िया खेती करती हैं कि उन्हें दूर-दूर तक जैविक खेती के आदर्श किसान की पहचान मिली है।

मात्र एक एकड़ के अपने खेत पर विविधता भरी अनेक फसलें उगाते हुए रामरति अपने पति रामबहल व परिवार के अन्य सदस्यों के सहयोग से न केवल 12 सदस्यों के परिवार के लिए पौष्टिक अनाज, सब्ज़ी, फल, दलहन, तिलहन, आदि का पर्याप्त उत्पादन कर लेती हैं अपितु विभिन्न फसलों की बिक्री से प्रति माह करीब 3000 रुपए की नकद आय भी प्राप्त कर लेती हैं। पिछले वर्ष की बिक्री को याद करते हुए रामरति ने बताया कि 5000 रुपए के तो केले ही बेचे थे व गेहूं तथा चावल भी कुल 10000 रुपए का बेचा था। इसके अतिरिक्त आलू व सब्ज़ियों की अच्छी बिक्री हुई।

रामरति अपने खेत पर ही कंपोस्ट व वर्मीकंपोस्ट खाद तैयार करती हैं। साथ ही नीम, गोमूत्र आदि से कीड़ों से रक्षा की दवा भी बनाती हैं। कभी-कभी विशेषकर धान की रोपाई में परिवार से बाहर के मज़दूर की ज़रूरत पड़ती भी है तो इसके बदले में वे भी मज़दूरी कर देते हैं। नकद खर्च बच जाता है। इस तरह खर्च को न्यूनतम रखते हुए रामरति ने खर्च व उत्पादन मे 1:13 का अनुपात प्राप्त किया है यानी 1 रुपया खर्च पर 13 रुपए का उत्पादन प्राप्त किया है।

रामरति का दृढ़ विश्वास है कि जैविक तौर-तरीकों से उगाए गए खाद्य पदार्थ स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है और इस तरह उनके परिवार का स्वास्थ्य बेहतर करने में मदद मिली है।

रामरति को अपने परिवार के स्वास्थ्य की ही नहीं अपने ग्राहकों के स्वास्थ्य की भी चिंता है। अतः वे अपने खेत में उगाए केलों को कार्बाइड या अन्य हानिकारक रसायनों से कभी नहीं पकातीं। केले को पकाने के लिए वे एक गड्ढा खोदकर उसमें केले के पत्ते बिछा देती हैं और उसमें केले रखकर केले के पत्तों व मिट्टी से केलों को ढंक देते हैं। उसमें मात्र एक गगरी या मटकी रखने की जगह छोड़ते हैं व मटकी के बीच एक छेद बना दिया जाता है। मटकी में धुंआ पैदा कर इसे नीचे की ओर फूंका जाता है जिससे केलों को धुंआ मिलता है और वे शीघ्र पक जाते हैं। इसी तरह आम को बाज़ार के लिए पकाने में भी रामरति हानिकारक रसायनों का प्रयोग नहीं करतीं हैं।

परिवार व खेत की देखभाल के साथ-साथ रामरति अन्य किसानों को जैविक खेती का प्रशिक्षण भी देती हैं। इसके लिए वे अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में भी गई हैं। लघु सीमान्त किसान मोर्चे की सदस्य होने के साथ वे स्थानीय विकास फेडरेशन की कोषाध्यक्ष भी हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***